Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-199-212

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 199-212
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. चंद्रशेखर प्रसाद

अतिथि सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
महारानी जानकी कुंवर कॉलेज, बेतिया.
अंगीभूत इकाई भीमराव अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर (बिहार).

Corresponding Author :

डॉ. चंद्रशेखर प्रसाद

अतिथि सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
महारानी जानकी कुंवर कॉलेज, बेतिया.
अंगीभूत इकाई भीमराव अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर (बिहार).

आधुनिकता और राष्ट्रवाद पर रवींद्रनाथ टैगोर के विचार : एक आलोचनात्मक पुनरीक्षण

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र बीसवीं सदी के महानतम विचारकों में से एक, रवींद्रनाथ टैगोर के 'आधुनिकता' और 'राष्ट्रवाद' संबंधी दृष्टिकोण का एक आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। जहाँ एक ओर समकालीन औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद को स्वतंत्रता का मुख्य साधन माना जा रहा था, वहीं टैगोर ने इसके उग्र और यांत्रिक स्वरूप के प्रति गहरी चिंता व्यक्त की थी। यह शोध रेखांकित करता है कि टैगोर पश्चिमी तर्ज पर आधारित भौगोलिक व राजनैतिक राष्ट्रवाद को वैश्विक मानवता के मार्ग में एक बड़ा अवरोध मानते थे। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद की अंधी दौड़ अंततः साम्राज्यवाद और संकीर्णता को जन्म देती है।

दूसरी ओर, आधुनिकता के संदर्भ में टैगोर का दृष्टिकोण अनूठा था; वे पश्चिमी विज्ञान, तर्कसंगतता और प्रगतिशील विचारों के समर्थक थे, किंतु इसके अंधानुकरण और आत्महीन मशीनीकरण के विरोधी थे। उन्होंने पूर्व की आध्यात्मिकता और पश्चिम की आधुनिक चेतना के समन्वय से 'सच्ची आधुनिकता' और 'विश्व-नागरिक' की संकल्पना की, जिसका जीवंत उदाहरण 'विश्वभारती' है।

ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए यह पेपर टैगोर के उपन्यासों (जैसे *'घर-बाहर'*) और उनके व्याख्यानों के आलोक में इस वैचारिक द्वंद्व की समीक्षा करता है। निष्कर्षतः, यह शोध सिद्ध करता है कि 21वीं सदी के वर्तमान दौर में, जहाँ दुनिया बढ़ते उग्र-राष्ट्रवाद, नस्लीय अलगाव और भू-राजनीतिक तनावों से जूझ रही है, टैगोर का मानवतावादी और समावेषी दृष्टिकोण पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

मुख्य शब्द (Keywords) : राष्ट्रवाद, आधुनिकता, वैश्विक मानवतावाद, समकालीन प्रासंगिकता, आलोचनात्मक पुनरीक्षण।

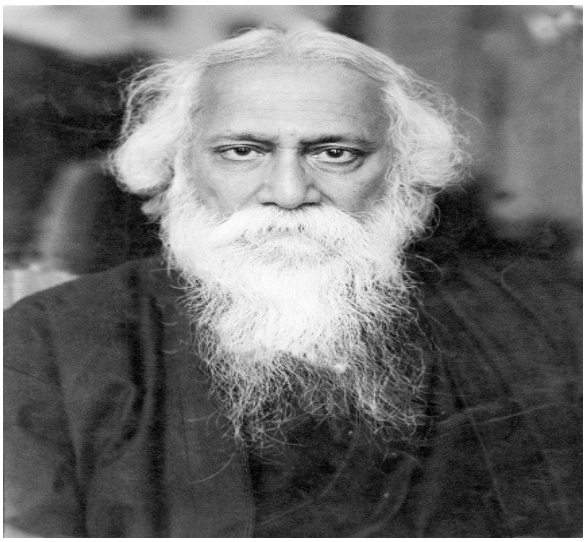

कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941).

Source: Keystone-France / Gamma-Keystone via Getty Images

प्रस्तावना : उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वाध का काल वैश्विक इतिहास में उथल-पुथल, औपनिवेशिक शोषण और तीव्र राजनीतिक चेतना के उभार का युग था। भारत में यह दौर ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन के संगठित होने और एक समेकित 'भारतीय पहचान' के निर्माण का साक्षी बना। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बीच, रवींद्रनाथ टैगोर (1861–1941) एक ऐसे विलक्षण विचारक, साहित्यकार और दार्शनिक के रूप में उभरे, जिन्होंने अपने समकालीन नेताओं की तुलना में 'आधुनिकता' और 'राष्ट्रवाद' की बिल्कुल भिन्न और अनूठी व्याख्या प्रस्तुत की (**Sen, 2005**)। जब पूरा देश ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए राष्ट्रवाद को एक अकाट्य हथियार के रूप में अपना रहा था, तब टैगोर इसके भीतर छिपे संभावित खतरों के प्रति आगाह कर रहे थे। उनका बौद्धिक चिंतन तात्कालिक राजनीतिक लाभों से परे जाकर सुदूर भविष्य में होने वाले वैचारिक और मानवीय संकटों को देख पा रहा था।

टैगोर के विचारों को समझने के लिए उस युग की दो सबसे बड़ी ताकतों 'राष्ट्रवाद' और 'आधुनिकता' के अंतर्संबंधों को समझना अनिवार्य है। पश्चिमी ज्ञानोदय (Western Enlightenment) से उपजी 'आधुनिकता' ने जहाँ तर्क, विज्ञान, व्यक्तिवाद और तकनीकी प्रगति का वादा किया था, वहीं दूसरी ओर इसने पूंजीवाद और हिंसक साम्राज्यवाद को भी जन्म दिया। यूरोपीय संदर्भों में, राष्ट्रवाद इसी आधुनिकता का एक राजनीतिक उपकरण बनकर उभरा, जिसने भौगोलिक सीमाओं के भीतर रहने वाले जनसमूह को 'एक राष्ट्र' के रूप में संगठित किया (**Anderson, 1983**)। परंतु, उपनिवेशों (जैसे भारत) में पहुँचते-पहुँचते इस आधुनिकता और राष्ट्रवाद का स्वरूप जटिल हो गया। भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूतों ने जहाँ पश्चिमी आधुनिकता के तार्किक पक्ष को स्वीकारा, वहीं औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के लिए राष्ट्रवाद को अनिवार्य माना (**Chatterjee, 1993**)। टैगोर इसी चौराहे पर खड़े होकर एक अत्यंत सूक्ष्म और आलोचनात्मक रुख अपनाते हैं।

टैगोर का राष्ट्रवाद की अवधारणा से पहला गंभीर वैचारिक टकराव 1905 के 'बंग-भंग आंदोलन' के दौरान हुआ। शुरुआत में उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का बढ़-चढ़कर नेतृत्व किया, देशप्रेम के गीतों की रचना की और राखी उत्सव के माध्यम से सांप्रदायिक सौहार्द स्थापित करने का प्रयास किया (**Sarkar, 1973**)। किंतु, जैसे ही आंदोलन में उग्रवाद, धार्मिक प्रतीकों का संकीर्ण उपयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के नाम पर गरीब व्यापारियों के

उत्पीड़न ने हिंसक रूप लिया, टैगोर ने खुद को सक्रिय राजनीति से पूरी तरह अलग कर लिया। इस ऐतिहासिक मोड़ ने उन्हें राष्ट्रवाद की मूल संरचना पर गहराई से विचार करने के लिए विवश किया। उन्होंने महसूस किया कि राष्ट्रवाद जब अपनी सीमाओं को पवित्र और परम सत्य मानने लगता है, तो वह अंततः 'दूसरों' (the 'Other') के प्रति घृणा और अपने ही समाज के भीतर असहिष्णुता को जन्म देता है (**Nandy, 1994**)।

राष्ट्रवाद की इसी विकृति पर प्रहार करते हुए टैगोर ने 1916 और 1917 के दौरान जापान और अमेरिका में दिए अपने प्रसिद्ध व्याख्यानों में कहा था : *"राष्ट्र (Nation) अपने राजनीतिक और व्यापारिक उद्देश्यों के लिए गठित एक यांत्रिक संगठन है... यह मनुष्य की स्वार्थपरता का संगठित रूप है, जो अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए मानवीय आत्मा की बलि दे देता है"* (**Tagore, 1917, p. 9**)।

टैगोर ने स्पष्ट किया कि पश्चिमी राष्ट्रवाद वास्तव में 'राष्ट्र-राज्य' (Nation-State) की एक ऐसी स्वार्थी मशीन है जिसका उद्देश्य केवल शक्ति का संचय और अन्य समाजों का शोषण करना है। वे देशभक्ति (Patriotism) और राष्ट्रवाद (Nationalism) में स्पष्ट अंतर देखते थे। उनके लिए देश की मिट्टी, संस्कृति और लोगों से प्रेम करना एक स्वाभाविक मानवीय गुण था, लेकिन उस प्रेम को एक राजनीतिक संगठन (राष्ट्र) के रूप में संस्थागत करके दूसरों से नफरत करना एक वैचारिक बीमारी थी (**Guha, 2002**)।

इसी तरह, 'आधुनिकता' को लेकर भी टैगोर का दृष्टिकोण पारंपरिक सुधारकों या कट्टर परंपरावादियों जैसा नहीं था। जहाँ महात्मा गांधी ने अपनी कृति *'हिंद स्वराज'* (1909) में पश्चिमी आधुनिकता, मशीनीकरण और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों की तीखी आलोचना की थी (**Gandhi, 1909**), वहीं टैगोर इसके पूर्ण विरोधी नहीं थे। वे यूरोपीय आधुनिकता के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक चेतना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के प्रबल प्रशंसक थे। उनका मानना था कि सत्य चाहे पूर्व का हो या पश्चिम का, वह पूरी मानवता की साझा विरासत है। वे भारत के अतीत की रूढ़िवादिता, जाति व्यवस्था और छुआछूत को आंतरिक कमजोरी मानते थे और इसे दूर करने के लिए आधुनिक तार्किक सोच को आवश्यक समझते थे (**Tagore, 1922**)। हालाँकि, वे उस पश्चिमी आधुनिकता के कड़े आलोचक थे जो केवल उपभोक्तावाद, भौतिकवाद और मानव के आत्मिक अवमूल्यन पर टिकी थी। उनके लिए 'सच्ची आधुनिकता' का अर्थ बाहरी पश्चिमीकरण नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना की स्वतंत्रता था।

शोध की समस्या और उद्देश्य : अकादमिक और राजनीतिक बहसों में अक्सर टैगोर के विचारों को गलत समझा गया। उनके समकालीनों ने स्वदेशी आंदोलन से पीछे हटने के कारण उन पर 'अराष्ट्रीय' (unpatriotic) होने का आरोप लगाया। यहाँ तक कि समकालीन इतिहास लेखन में भी कई बार उन्हें एक शुद्ध 'अंतरराष्ट्रीयतावादी' (Internationalist) या एक आदर्शवादी कवि मानकर उनके राजनीतिक विचारों की धार को कम करके आंका गया। अतः प्रस्तुत शोध पत्र की मुख्य समस्या यह पड़ताल करना है कि क्या टैगोर का राष्ट्रवाद का विरोध उन्हें भारत की स्वतंत्रता की आकांक्षाओं से दूर ले जाता है, या फिर वे एक अधिक व्यापक, समावेषी और मानवीय स्वतंत्रता की वकालत कर रहे थे? इस शोध का मुख्य उद्देश्य टैगोर के विचारों का एक आलोचनात्मक पुनरीक्षण (Critical Re-examination) करना है। यह शोध यह समझने का प्रयास करेगा कि कैसे टैगोर ने पूर्व की आध्यात्मिक संपदा और पश्चिम की आधुनिक तार्किक चेतना के मिलन से एक 'विश्व-नागरिक' (Global Citizen) का वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने शांतिनिकेतन और 'विश्वभारती' (जहाँ पूरी दुनिया एक घोंसले में मिलती है) के रूप में धरातल पर उतारा (**Das Gupta, 2004**)। 21वीं सदी के समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ एक बार फिर उग्र-राष्ट्रवाद, संरक्षणवाद (Protectionism) और सांस्कृतिक अलगाववाद की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं, टैगोर के विचारों का यह पुनरीक्षण न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन राजनीतिक दर्शन के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

साहित्य की समीक्षा : रवींद्रनाथ टैगोर के राष्ट्रवाद और आधुनिकता संबंधी विचारों का अध्ययन भारतीय बौद्धिक इतिहास और राजनीतिक दर्शन का एक अत्यंत उर्वर क्षेत्र रहा है। टैगोर के समकालीनों से लेकर आधुनिक इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों और दार्शनिकों ने उनके बहुआयामी दृष्टिकोण को अलग-अलग चश्मों से देखा है। इस खंड में उन प्रमुख विद्वानों के साहित्यों की समीक्षा की गई है जिन्होंने टैगोर के वैचारिक द्वंद्व, उनकी दूरदर्शिता और समकालीन नेताओं (विशेषकर महात्मा गांधी और सरोजनी नायडू आदि) के साथ उनके बौद्धिक मतभेदों को रेखांकित किया है।

1. राष्ट्रवाद की अवैधता और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (आशीष नंदी का दृष्टिकोण) : टैगोर के राष्ट्रवाद विरोधी विचारों का सबसे गहरा और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रसिद्ध समाजशास्त्री आशीष नंदी (1994) ने अपनी पुस्तक *'The Illegitimacy of Nationalism: Rabindranath Tagore and the Politics of Self'* में किया है।

- **मुख्य तर्क:** नंदी का तर्क है कि टैगोर भारत के उन शुरुआती विचारकों में से थे जिन्होंने यह पहचान लिया था कि राष्ट्रवाद अनिवार्य रूप से एक पश्चिमी आयात (Western Import) है। यदि भारत औपनिवेशिक सत्ता से मुक्ति पाने के लिए इसी पश्चिमी हथियार को अपनाता है, तो वह अनजाने में उसी दमनकारी व्यवस्था का हिस्सा बन जाएगा जिससे वह लड़ रहा है।
- **उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषण:** नंदी ने टैगोर के उपन्यासों, विशेष रूप से *'गोरा'* और *'घर-बाहर'*, का उपयोग यह दिखाने के लिए किया है कि कैसे देशभक्ति जब उग्र-राष्ट्रवाद में बदलती है, तो वह समाज को भीतर से खोखला कर देती है। नंदी के अनुसार, टैगोर 'देशभक्ति' (जो कि मिट्टी और समाज से जैविक जुड़ाव है) और 'राष्ट्रवाद' (जो एक वैचारिक और राजनीतिक पागलपन है) के बीच एक बारीक रेखा खींचते हैं।

2. तर्कवादी और बहुलतावादी टैगोर (अमर्त्य सेन का दृष्टिकोण) : नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री और दार्शनिक अमर्त्य सेन (2005) ने अपनी कृति *'The Argumentative Indian'* में टैगोर को एक 'उदारवादी तर्कवादी' और 'अंतरराष्ट्रीयतावादी' (Internationalist) के रूप में प्रस्तुत किया है।

- **स्वतंत्रता का व्यापक अर्थ:** सेन का तर्क है कि टैगोर के लिए 'स्वतंत्रता' का दायरा केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति (Political Independence) तक सीमित नहीं था। वे भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे जो बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र हो। सेन टैगोर की प्रसिद्ध कविता—*"Where the mind is without fear and the head is held high"* का हवाला देते हुए कहते हैं कि टैगोर का आदर्श एक ऐसा समाज था जो संकीर्ण घरेलू दीवारों (narrow domestic walls) में बंटा न हो।
- **गांधी और टैगोर का संवाद:** सेन ने महात्मा गांधी और टैगोर के बीच के ऐतिहासिक संवादों और मतभेदों को विस्तार से दर्ज किया है। जहाँ गांधीजी ने आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी सभ्यता के प्रति अधिक संशयवादी रुख अपनाया, वहीं टैगोर ने हमेशा यह वकालत की कि हमें पश्चिम की अच्छी बातों (जैसे विज्ञान, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तर्क) को बिना किसी संकोच के स्वीकार करना चाहिए। सेन के अनुसार, टैगोर की आधुनिकता समावेशी और वैश्विक थी।

3. राजनीतिक दर्शन और इतिहास लेखन (रामचंद्र गुहा और पार्थ चटर्जी) : इतिहासकार रामचंद्र गुहा (2010) ने अपनी पुस्तक *'Makers of Modern India'* में टैगोर को आधुनिक भारत के सबसे पहले और सबसे मुखर 'वैश्विक विचारकों' में गिना है। गुहा का मानना है कि 1916-17 में जब पूरा विश्व प्रथम विश्वयुद्ध की आग में झुलस रहा था और यूरोपीय देश राष्ट्रवाद के नाम पर एक-दूसरे का नरसंहार कर रहे थे, तब टैगोर का 'राष्ट्रवाद' नामक व्याख्यान एक वैश्विक चेतावनी की तरह था। गुहा रेखांकित करते हैं कि टैगोर ने राष्ट्रवाद को 'सामूहिक स्वार्थ का संगठित रूप' कहा था।

इसके विपरीत, उत्तर-औपनिवेशिक विचारक पार्थ चटर्जी (1993) अपनी पुस्तक *'The Nation and Its Fragments'* में भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की एक अलग व्याख्या करते हैं। यद्यपि चटर्जी सीधे तौर पर टैगोर पर केंद्रित नहीं हैं, लेकिन उनका सिद्धांत टैगोर के संकट को समझने में मदद करता है। चटर्जी का तर्क है कि भारतीय राष्ट्रवाद ने खुद को दो क्षेत्रों में विभाजित किया था 'बाहरी' (भौतिक/राजनैतिक क्षेत्र, जहाँ उसने पश्चिम की नकल की) और 'आंतरिक' (आध्यात्मिक/सांस्कृतिक क्षेत्र, जहाँ उसने अपनी संप्रभुता बनाए रखी)। टैगोर का संकट यहीं से शुरु होता है; वे इस आंतरिक क्षेत्र में भी संकीर्ण धार्मिक या सांस्कृतिक प्रतीकों के राजनीतिक उपयोग के खिलाफ थे, क्योंकि उन्हें डर था कि यह अंततः अल्पसंख्यकों और हाशिए के समाजों को अलग-थलग कर देगा।

4. साहित्य की समीक्षा में अंतराल (Research Gap) : उपरोक्त साहित्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्वानों ने टैगोर को या तो एक भविष्यवक्ता अंतरराष्ट्रीयतावादी माना है या फिर गांधी के वैचारिक प्रतिपक्ष के रूप में देखा है। परंतु, वर्तमान 21वीं सदी के परिदृश्य में जहाँ 'वैश्वीकरण' संकट में है, डिजिटल निगरानी और लोकलुभावन उग्र-राष्ट्रवाद का उभार हो रहा है—टैगोर के 'आधुनिकता' के संप्रत्यय का पुनर्मूल्यांकन करने की कमी दिखती है।

प्रस्तुत शोध पत्र इसी 'रिसर्च गैप' को भरने का प्रयास करता है। यह केवल इस बात का अध्ययन नहीं है कि टैगोर अपने दौर में क्या सोचते थे, बल्कि यह एक 'आलोचनात्मक पुनरीक्षण' है कि उनकी आधुनिकता और राष्ट्रवाद की आलोचना आज के दौर के भू-राजनीतिक और सांस्कृतिक संकटों को सुलझाने में हमें क्या व्यावहारिक विकल्प दे सकती है।

मुख्य वैचारिक खंड (Main Body Chapters)

क. पश्चिमी राष्ट्रवाद पर टैगोर का प्रहार: 'एक यांत्रिक अवधारणा' : रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा राष्ट्रवाद की आलोचना किसी सतही राजनीतिक विरोध से नहीं, बल्कि एक गहरे दार्शनिक और मानवीय सरोकार से उपजी थी। टैगोर ने जिस 'राष्ट्रवाद' (Nationalism) को अपने समय में फलते-फूलते देखा—विशेषकर प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान यूरोप में वह कोई सांस्कृतिक या आध्यात्मिक मिलन नहीं था, बल्कि वह मुख्य रूप से पश्चिमी राष्ट्र-राज्य (Nation-State) की एक यांत्रिक और व्यावसायिक अवधारणा था।

टैगोर का मानना था कि पश्चिमी राष्ट्रवाद मनुष्य की सामूहिक स्वार्थपरता, सत्ता की भूख और आर्थिक लिप्सा को एक पवित्र चोला पहनाने का उपक्रम है। उन्होंने 'राष्ट्र' (Nation) को परिभाषित करते हुए लिखा है: *"एक राष्ट्र, अपने राजनीतिक और व्यावसायिक पहलुओं में, एक पूरे जनसमूह का वह संगठन है जो यांत्रिक दक्षता के उद्देश्य से तैयार किया गया है..."* (**Tagore, 1917, p. 7**)।

यहाँ 'यांत्रिक' (Mechanical) शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। टैगोर के अनुसार, जैसे एक मशीन बिना किसी मानवीय संवेदना के, सिर्फ इनपुट और आउटपुट के सिद्धांतों पर काम करती है, ठीक वैसे ही 'राष्ट्र-राज्य' भी व्यक्तिगत नैतिकता को कुचलकर केवल शक्ति-संचय (Power Accumulation) के लिए काम करता है। जब कोई समाज खुद को एक 'राष्ट्र' के रूप में इस तरह संगठित कर लेता है, तो वह अपनी आत्मा खो देता है और पड़ोसी समाजों के लिए एक हिंसक ख़तरा बन जाता है।

टैगोर के अनुसार राष्ट्रवाद की आंतरिक संरचना : टैगोर ने राष्ट्रवाद की इस यांत्रिक प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए इसकी तुलना एक 'पावर लूम' या दैत्य से की थी। इसे हम नीचे दिए गए वैचारिक प्रवाह चार्ट के माध्यम से समझ सकते हैं, जो यह दिखाता है कि कैसे एक सजीव मानव समाज राष्ट्रवाद के प्रभाव में आकर एक हिंसक मशीन में तब्दील हो जाता है:

इस वैचारिक ढांचे के अनुसार, जब कोई समाज 'राष्ट्र' बनता है, तो वह अपनी आंतरिक विविधता को नष्ट करके नागरिकों में एकरूपता (Uniformity) थोपने का प्रयास करता है। टैगोर का तर्क था कि पश्चिमी राष्ट्रवाद अनिवार्य रूप से साम्राज्यवाद को जन्म देता है, क्योंकि एक हिंसक मशीन को जीवित रहने के लिए लगातार दूसरे कमजोर देशों के संसाधनों को हड़पना पड़ता है (**Nandy, 1994**)।

स्वदेशी आंदोलन से अलगाव और 'घर-बाहर' (The Home and the World) का आलोचनात्मक विश्लेषण : टैगोर की यह सैद्धांतिक आलोचना केवल कागज़ी नहीं थी, बल्कि यह उनके स्वयं के कड़वे राजनीतिक अनुभवों से छनकर बाहर आई थी। 1905 के बंग-भंग विरोधी स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के बाद, टैगोर ने देखा कि आंदोलन धीरे-धीरे धार्मिक कट्टरता, उग्र नारों और अल्पसंख्यक विरोधी हिंसा की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने महसूस किया कि ब्रिटिश सत्ता का विरोध करने के नाम पर जो 'राष्ट्रवाद' भारतीय मानस में भरा जा रहा है, वह उसी पश्चिमी बीमारी की भारतीय नकल है जिससे वे नफरत करते थे (**Sarkar, 1973**)।

टैगोर ने अपने इस गहरे वैचारिक द्वंद्व को 1916 के अपने कालजयी उपन्यास 'घर-बाहर' (The Home and the World) में पूरी शिद्दत के साथ अभिव्यक्त किया है। उपन्यास के तीन मुख्य पात्र निखिल, संदीप और बिमला राष्ट्रवाद और आधुनिकता के विभिन्न आयामों के जीवंत प्रतीक हैं:

पात्र	वैचारिक प्रतिनिधित्व	टैगोर का आलोचनात्मक दृष्टिकोण
निखिल	वैश्विक मानवतावाद, नैतिक आधुनिकता और आत्म-चेतना	यह पात्र स्वयं टैगोर के विचारों का संवाहक है। वह बिना किसी दिखावे के अपने लोगों की सेवा करता है, लेकिन उग्र-राष्ट्रवाद के आगे घुटने टेकने से मना कर देता है।

पात्र	वैचारिक प्रतिनिधित्व	टैगोर का आलोचनात्मक दृष्टिकोण
सदीप	उग्र-राष्ट्रवाद, लोकलुभावनवाद (Populism) और 'साध्य ही साधन को सही ठहराता है' का सिद्धांत	यह पश्चिमी तर्ज के हिंसक राष्ट्रवाद का प्रतीक है। संदीप 'वंदे मातरम' के नारों से भीड़ को उन्मादित करता है, लेकिन उसका राष्ट्रवाद गरीब मुस्लिम दुकानदारों और शोषितों के प्रति अंधा है।
बिमला	भारतीय समाज / भारत माता का प्रतीक	वह पारंपरिक 'घर' और आधुनिक बाहरी 'विश्व' के बीच फंसी है। वह शुरुआत में संदीप के उग्र राष्ट्रवाद के सम्मोहन में बह जाती है, लेकिन अंत में इसके विनाशकारी रुप को पहचानती है।

उपन्यास में निखिल का एक प्रसिद्ध संवाद सीधे तौर पर राष्ट्रवाद पर टैगोर के प्रहार को प्रतिध्वनित करता है: *"मैं देश की सेवा करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन मैं उस देश की पूजा करने से इनकार करता हूँ जो मानवता को नष्ट कर दे। देश की पूजा करना अंततः देश के विनाश का कारण बनता है।"* (**Tagore, 1916**)।

संदीप का राष्ट्रवाद जहाँ विदेशी कपड़ों की होली जलाने और 'दूसरों' के प्रति नफरत पर टिका है, वहीं निखिल का दृष्टिकोण रचनात्मक है—वह अपने इलाके के बुनकरों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावहारिक कदम उठाता है। टैगोर ने संदीप के माध्यम से यह दिखाया कि राष्ट्रवाद कैसे एक 'सामूहिक नशा' बन जाता है, जहाँ व्यक्ति की निजी सोच और विवेक को 'राष्ट्रहित' के नाम पर पूरी तरह कुचल दिया जाता है।

इस प्रकार, टैगोर ने यह साबित किया कि पश्चिमी राष्ट्रवाद एक ऐसी 'यांत्रिक अवधारणा' है जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। भारत के संदर्भ में उनकी चेतावनी यह थी कि यदि हमने इस यांत्रिक राष्ट्रवाद के ढांचे को अपनाकर आज़ादी हासिल भी कर ली, तो वह आज़ादी वास्तविक नहीं होगी, बल्कि वह केवल 'मालिकों का बदलना' होगी, जिसमें शोषित जनता की स्थिति जस की तस बनी रहेगी (**Guha, 2010**)।

ख. टैगोर और आधुनिकता: विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय : रवींद्रनाथ टैगोर का 'आधुनिकता' के प्रति दृष्टिकोण समकालीन विचारकों की तुलना में अत्यंत अद्वितीय, प्रगतिशील और जटिल था। जहाँ एक ओर पारंपरिक समाजों में आधुनिकता को पश्चिमीकरण का पर्याय मानकर उसका अंधानुकरण किया जा रहा था, वहीं दूसरी ओर कुछ कट्टर परंपरावादी तत्व इसके पूर्ण बहिष्कार की वकालत कर रहे थे। टैगोर ने इन दोनों अतियों को खारिज करते हुए एक वैकल्पिक आधुनिकता का दर्शन प्रस्तुत किया, जो पूर्व की 'अध्यात्मिक चेतना' और पश्चिम की 'वैज्ञानिक तार्किकता' के रचनात्मक समन्वय पर आधारित थी (**Sen, 2005**)।

टैगोर के लिए आधुनिकता कोई कैलेंडर की तारीख या पहनावे का बदलाव नहीं थी, बल्कि यह मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता की एक स्थिति थी। उन्होंने अपनी कृति *'Creative Unity'* में स्पष्ट किया था:
"सच्ची आधुनिकता समय के किसी विशेष बिंदु पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह विचार की स्वतंत्रता और व्यापक दृष्टि की परिचायक है... यह बाहरी फैशन नहीं, बल्कि आंतरिक दृष्टिकोण है" (**Tagore, 1922, p. 87**)।

टैगोर इस बात के प्रबल समर्थक थे कि पश्चिमी आधुनिकता ने पूरी दुनिया को 'विज्ञान' और 'तर्कवाद' (Reason) के रूप में दो अमूल्य उपहार दिए हैं। वे मानते थे कि प्रकृति के रहस्यों को समझने और मानव जीवन को अज्ञानता व अंधविश्वास से मुक्त करने के लिए विज्ञान अनिवार्य है। वे भारत के अतीत की जड़ता, जैसे- जाति

व्यवस्था, छुआछूत और संकीर्ण धार्मिक कर्मकांडों के कड़े आलोचक थे और इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए पश्चिमी वैज्ञानिक चेतना को आवश्यक मानते थे। किंतु, वे उस पश्चिमी आधुनिकता के विरोधी थे जो केवल भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और यांत्रिक उपयोगितावाद पर आधारित थी, जिसने मनुष्य की कलात्मक और आध्यात्मिक चेतना को हाशिए पर धकेल दिया था।

शांतिनिकेतन और विश्वभारती: एक वैकल्पिक शिक्षा मॉडल : टैगोर ने विज्ञान और अध्यात्म के इस सैद्धांतिक समन्वय को केवल कागज़ तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे धरातल पर उतारने के लिए 1901 में 'शांतिनिकेतन' (आश्रम) और बाद में 1921 में 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' की स्थापना की। विश्वभारती का संस्कृत ध्येय वाक्य था: *"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्"* अर्थात *"जहाँ पूरी दुनिया एक घोंसले में आकर मिलती है"* (**Das Gupta, 2004**)।

टैगोर का यह शिक्षा मॉडल औपनिवेशिक ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था (मैकॉले प्रणाली) के पूरी तरह खिलाफ था, जिसे वे 'क्लर्क बनाने की फैक्ट्री' और एक 'बंद जेल' मानते थे। टैगोर का मानना था कि सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को प्रकृति के साथ और पूरी वैश्विक मानवता के साथ एकाकार करे।

टैगोर के इस समन्वयवादी शिक्षा मॉडल की आंतरिक संरचना और उद्देश्यों को नीचे दिए गए वैचारिक डायग्राम के माध्यम से समझा जा सकता है:

इस शिक्षा मॉडल के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित थे:

1. **प्रकृति के सानिध्य में शिक्षा:** शांतिनिकेतन में कक्षाएं चार दीवारों के भीतर नहीं, बल्कि पेड़ों के नीचे, खुले आसमान में लगती थीं। टैगोर का मानना था कि बच्चा प्रकृति के संपर्क में रहकर ही अपनी संवेदनाओं का सर्वोत्तम विकास कर सकता है।
2. **कला और विज्ञान का सह-अस्तित्व:** यहाँ जहाँ एक तरफ संगीत, नृत्य, चित्रकला और साहित्य (पूर्वी अध्यात्म और कला का प्रतीक) को अनिवार्य हिस्सा बनाया गया, वहीं दूसरी तरफ कृषि विज्ञान, कुटीर उद्योग और आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों (पश्चिमी तार्किकता का प्रतीक) के प्रशिक्षण पर भी उतना ही ज़ोर दिया गया (O'Connell, 2002)।

3. **अंतरराष्ट्रीयतावाद की प्रयोगशाला:** विश्वभारती भारत का पहला ऐसा केंद्र बना जहाँ चीनी, जापानी, यूरोपीय और भारतीय विद्वान एक साथ मिलकर शोध कर रहे थे। यह टैगोर की उस आधुनिकता का साक्षात रूप था जो किसी भौगोलिक सीमा को स्वीकार नहीं करती थी।

इस प्रकार, टैगोर ने साबित किया कि आधुनिक होने के लिए अपनी जड़ों (संस्कृति और अध्यात्म) को काटना ज़रूरी नहीं है, और न ही अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए वैश्विक ज्ञान (विज्ञान और तर्क) से मुंह मोड़ना ज़रूरी है। उनकी आधुनिकता समावेशी थी, जो पूर्व और पश्चिम के सर्वश्रेष्ठ तत्वों के मिलन से एक 'विश्व-नागरिक' के निर्माण का सपना देखती थी।

ग. राष्ट्रवाद बनाम मानवतावाद (Nationalism vs. Internationalism) : रवींद्रनाथ टैगोर के राजनीतिक दर्शन का केंद्रीय अक्ष 'राष्ट्रवाद बनाम मानवतावाद' का द्वंद्व है। टैगोर के चिंतन में, 'मानवतावाद' या 'अंतरराष्ट्रीयतावाद' कोई उपरी राजनीतिक समझौता नहीं था, बल्कि यह उनके आध्यात्मिक बोध और उपनिषदों के 'वसुधैव कुटुंबकम्' (पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है) के दर्शन से प्रेरित था। जब बीसवीं सदी के प्रारंभ में पूरा विश्व भौगोलिक सीमाओं को पवित्र मानकर अपनी राष्ट्रीय पहचान को मजबूत कर रहा था, तब टैगोर ने चेतावनी दी थी कि राष्ट्रवाद का यह संकीर्ण मार्ग अनिवार्य रूप से वैश्विक मानवता का गला घोंट देगा (**Nandy, 1994**)।

टैगोर ने स्पष्ट रूप से देखा कि राष्ट्रवाद व्यक्ति को एक सीमित पहचान में बांध देता है, जिससे वह अपनी सीमाओं के बाहर के मनुष्यों को 'पराया' या शत्रु समझने लगता है। उन्होंने राष्ट्रवाद के इस अमानवीय पक्ष पर प्रहार करते हुए लिखा था: *"जब राष्ट्रवाद सर्वोपरि हो जाता है, तब मनुष्य अपनी मानवता को भूल जाता है। मैं कभी भी राष्ट्रवाद को मानवता के ऊपर जीतने नहीं दूंगा।"* (**Tagore, 1917, p. 29**)।

यह उद्धरण टैगोर के वैचारिक पदानुक्रम को स्पष्ट करता है, जहाँ मानवता का स्थान राष्ट्र से कहीं ऊपर है। उनके अनुसार, किसी देश की वास्तविक महानता इस बात में नहीं है कि उसकी राजनीतिक या सैन्य शक्ति कितनी बड़ी है, बल्कि इस बात में है कि वह पूरी मानवता के कल्याण में कितना योगदान देता है।

'राष्ट्र-पूजा' (Nation-worship) के खतरे और वैश्विक नागरिकता : टैगोर ने समकालीन राजनीति में उभरती 'राष्ट्र-पूजा' या राष्ट्र को ही भगवान मान लेने की प्रवृत्ति (Nation-worship) को बीसवीं सदी का सबसे बड़ा अंधविश्वास कहा था। उनका तर्क था कि राष्ट्र को एक अमूर्त देवता बनाकर जब उसकी वेदी पर व्यक्तिगत नैतिकता की बलि दी जाती है, तो वह समाज को भीतर से क्रूर बना देता है।

टैगोर के मानवतावाद और पारंपरिक राष्ट्रवाद के बीच के बुनियादी अंतर को नीचे दी गई तालिका के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

वैचारिक आयाम	पारंपरिक राष्ट्रवाद (Nationalism)	टैगोर का मानवतावाद (Internationalism)
बुनियादी इकाई	भौगोलिक और राजनीतिक सीमाएं	वैश्विक मानव समुदाय
प्रेरक शक्ति	सामूहिक स्वार्थ और सत्ता का संचय	आपसी सहयोग, कला और आत्मिक स्वतंत्रता

वैचारिक आयाम	पारंपरिक राष्ट्रवाद (Nationalism)	टैगोर का मानवतावाद (Internationalism)
स्वतंत्रता का अर्थ	केवल राजनीतिक संप्रभुता (Political Independence)	मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक मुक्ति
अंतिम लक्ष्य	राष्ट्र-राज्य को शक्तिशाली बनाना	'विश्व-नागरिक' का निर्माण

टैगोर के अनुसार, जब कोई व्यक्ति संकीर्ण राष्ट्रवाद से ऊपर उठकर अंतरराष्ट्रीयतावाद को अपनाता है, तब वह वास्तव में स्वतंत्र होता है। उनकी प्रसिद्ध कविता *'गीतांजलि'* की ये पंक्तियाँ इसी वैश्विक नागरिकता और संकीर्ण घरेलू दीवारों से मुक्त समाज का आह्वान करती हैं: *"Where the mind is without fear and the head is held high; / Where knowledge is free; / Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls..."* (**Tagore, 1912**)।

यहाँ 'संकीर्ण घरेलू दीवारें' केवल राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं का ही प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे जाति, धर्म, नस्ल और संकीर्ण राष्ट्रीय अहंकार की भी दीवारें हैं जो मनुष्यों को आपस में मिलने से रोकती हैं।

गांधी और टैगोर: राष्ट्रवाद बनाम अंतरराष्ट्रीयतावाद का ऐतिहासिक संवाद : टैगोर के अंतरराष्ट्रीयतावाद को समझने के लिए महात्मा गांधी के साथ उनके ऐतिहासिक और बौद्धिक संवादों का विश्लेषण अनिवार्य है। दोनों नेता एक-दूसरे का गहरा सम्मान करते थे (टैगोर ने गांधी को 'महात्मा' और गांधी ने टैगोर को 'गुरुदेव' की उपाधि दी थी), लेकिन राष्ट्रवाद के प्रश्न पर दोनों में गहरे मतभेद थे (**Sen, 2005**)।

गांधीजी का मानना था कि अंतरराष्ट्रीयतावादी होने के लिए पहले एक मजबूत राष्ट्रवादी होना ज़रूरी है; उनके लिए भारत की आज़ादी पूरी मानवता की सेवा का जरिया थी। इसके विपरीत, टैगोर का डर यह था कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पैदा होने वाला राष्ट्रवाद का यह नशा आज़ादी मिलने के बाद भी भारत के मानस से नहीं उतरेगा और भारत भी यूरोपीय देशों की तरह एक आक्रामक, संकीर्ण राष्ट्र-राज्य बन जाएगा (**Guha, 2010**)।

जब गांधीजी ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार और उनकी होली जलाने का आह्वान किया, तो टैगोर ने इसका तीखा विरोध करते हुए इसे 'नफरत का अर्थशास्त्र' और संकीर्ण अलगाववाद कहा। टैगोर का मानना था कि पश्चिम का विरोध करने का मतलब यह नहीं होना चाहिए कि हम उनके साथ अपने मानवीय और सांस्कृतिक संबंधों को ही काट लें।

निष्कर्षतः, टैगोर का मानवतावाद कोई कमज़ोर आदर्शवाद नहीं था, बल्कि वह एक गहरी राजनैतिक समझ थी जो यह देख पा रही थी कि जब तक मनुष्य अपनी राष्ट्रीय पहचान से ऊपर उठकर वैश्विक धरातल पर सोचना शुरु नहीं करेगा, तब तक युद्ध, साम्राज्यवाद और मानवीय शोषण का अंत नहीं हो सकता। शांतिनिकेतन और विश्वभारती के माध्यम से उन्होंने इसी मानवतावादी दर्शन को एक जीवंत रूप दिया था।

आलोचनात्मक विश्लेषण और समकालीन प्रासंगिकता : रवींद्रनाथ टैगोर के राष्ट्रवाद और आधुनिकता संबंधी विचारों का अध्ययन केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ का विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह समकालीन राजनीतिक दर्शन को समझने की एक अनिवार्य कुंजी है। यह खंड दो हिस्सों में विभाजित है: पहला, टैगोर के विचारों का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन (उनकी सीमाएं क्या थीं?) और दूसरा, आज के वैश्विक परिदृश्य में लोकलुभावन उग्र-राष्ट्रवाद के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता।

क. आलोचनात्मक विश्लेषण : यद्यपि टैगोर का मानवतावाद और अंतरराष्ट्रीयतावाद नैतिक रूप से अत्यंत उत्कृष्ट था, परंतु समकालीन इतिहासकारों और राजनीतिक विश्लेषकों ने इसकी व्यावहारिक सीमाओं की आलोचना भी की है।

- **अत्यधिक आदर्शवाद (Utopianism):** टैगोर पर यह सबसे बड़ा आरोप था कि उनका दृष्टिकोण एक कवि का स्वप्निल आदर्शवाद था, जो तत्कालीन कठोर औपनिवेशिक वास्तविकताओं से दूर था। जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं का मानना था कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसे क्रूर और संगठित औपनिवेशिक ढांचे से लड़ने के लिए 'राष्ट्रवाद' के बैनर तले जनता का एकीकरण अनिवार्य था। बिना एक मजबूत राष्ट्रीय पहचान के, बिखरी हुई जनता को साम्राज्यवादी शक्ति के खिलाफ लामबंद करना व्यावहारिक रूप से असंभव था (**Chatterjee, 1993**)।
- **संस्थागत ढांचे का अभाव:** टैगोर ने राष्ट्र-राज्य (Nation-State) की 'यांत्रिक मशीन' के रूप में आलोचना तो की, लेकिन उन्होंने इसका कोई वैकल्पिक राजनीतिक या प्रशासनिक ढांचा प्रस्तुत नहीं किया। यदि राष्ट्र-राज्य अप्रासंगिक हैं, तो वैश्विक समाज का प्रबंधन, न्याय व्यवस्था और अधिकारों का संरक्षण कैसे होगा? इस प्रश्न पर टैगोर का दर्शन मौन रहता है; वे राजनीतिक संप्रभुता के स्थान पर केवल आत्मिक संप्रभुता पर अधिक बल देते हैं।
- **वर्गीय सीमाएं:** कुछ आलोचकों का यह भी तर्क है कि टैगोर का शांतिनिकेतन और 'विश्व-नागरिक' का मॉडल एक खास संभ्रांत (Elite) और बौद्धिक वर्ग तक ही सीमित था। एक ऐसे देश में जहाँ अधिकांश आबादी घोर गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक दमन से जूझ रही थी, वहाँ भौगोलिक सीमाओं से परे 'वैश्विक नागरिकता' की बात करना एक दूर की कौड़ी जैसा प्रतीत होता था (**Nandy, 1994**)।

ख. समकालीन प्रासंगिकता: 21वीं सदी का लोकलुभावन उग्र-राष्ट्रवाद : टैगोर के विचारों की व्यावहारिक सीमाएं चाहे जो भी रही हों, परंतु आज 21वीं सदी के वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में उनकी भविष्यवाणियां डराने की हद तक सच साबित हो रही हैं। आज की दुनिया जिस वैचारिक संकट से गुजर रही है, उसकी तुलना सीधे तौर पर टैगोर द्वारा 1916 में दी गई चेतावनियों से की जा सकती है।

टैगोर की भविष्यवाणियों और वर्तमान वैश्विक प्रवृत्तियों के बीच के सीधे संबंध को नीचे दी गई तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है:

टैगोर की ऐतिहासिक चिंता (1916-17)	21वीं सदी की समकालीन वास्तविकता	व्यावहारिक परिणाम
यांत्रिक एकरूपता (Mechanical Uniformity)	लोकलुभावन राष्ट्रवाद	अल्पसंख्यकों, प्रवासियों और 'दूसरों' का सामाजिक-राजनीतिक अलगाव।
व्यावसायिक स्वार्थ की मशीन	संरक्षणवाद और व्यापार युद्ध	वैश्विक सहयोग (जैसे UN, WHO) की संस्थाओं का कमजोर होना और 'माई नेशन फर्स्ट' की नीति।

टैगोर की ऐतिहासिक चिंता (1916-17)	21वीं सदी की समकालीन वास्तविकता	व्यावहारिक परिणाम
संकीर्ण घरेलू दीवारें	सांस्कृतिक अलगाववाद और ध्रुवीकरण	इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में भी वैचारिक कूपमंडूकता और नफरत का प्रसार।

आज की दुनिया में जब हम विभिन्न देशों में लोकलुभावन उग्र-राष्ट्रवाद का उभार देखते हैं जहाँ लोकलुभावन नेता 'बाहरी शत्रुओं' या प्रवासियों का डर दिखाकर बहुसंख्यक आबादी को उन्मादित करते हैं तो हमें टैगोर के उपन्यास *'घर-बाहर'* के 'संदीप' की याद आती है। संदीप का चरित्र आज के दौर के लोकलुभावन राजनेताओं का सटीक पूर्व-आभास था, जो जनभावनाओं और नारों का इस्तेमाल अपनी राजनीतिक सत्ता के लिए करते हैं (**Guha, 2010**)।

इसके अतिरिक्त, टैगोर की प्रासंगिकता निम्नलिखित समकालीन संकटों में साफ़ देखी जा सकती है:

1. **जलवायु परिवर्तन और महामारी (Global Crises):** जलवायु परिवर्तन, शरणार्थी संकट और कोविड-19 जैसी महामारियों ने यह साबित कर दिया है कि आज की सबसे बड़ी समस्याएं 'वैश्विक' हैं, जिनका समाधान कोई भी देश अपनी सीमाओं को बंद करके या अकेले 'राष्ट्रवादी' होकर नहीं कर सकता। इसके लिए उसी 'वैश्विक सहयोग' और अंतरराष्ट्रीयतावाद की आवश्यकता है जिसकी वकालत टैगोर ने विश्वभारती की स्थापना के समय की थी (**Sen, 2005**)।
2. **डिजिटल आधुनिकता बनाम मानवीय मूल्य:** आज की तकनीकी आधुनिकता (जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा सर्विलांस) ने मनुष्य को और अधिक 'यांत्रिक' बना दिया है, जहाँ व्यक्ति की पहचान केवल उपभोक्ता या डेटा पॉइंट के रूप में रह गई है। टैगोर ने एक सदी पहले आगाह किया था कि विज्ञान जब मानवीय संवेदना और अध्यात्म से कट जाता है, तो वह केवल एक दमनकारी मशीन बन जाता है।

अतः, टैगोर का 'आलोचनात्मक पुनरीक्षण' हमें यह सिखाता है कि राष्ट्रवाद जब अपनी सीमाओं में अंधा हो जाता है, तो वह आत्मघाती बन जाता है। आज की दुनिया को युद्ध और अलगाव से बचाने के लिए टैगोर का यह विचार एक प्रकाश स्तंभ की तरह है कि:

"देशभक्ति हमारा अंतिम आध्यात्मिक आश्रय नहीं हो सकती; हमारा आश्रय तो मानवता है। मैं हीरे की कीमत पर कांच नहीं खरीदूँगा, और जब तक मैं जीवित हूँ, मानवता पर देशभक्ति को कभी विजयी नहीं होने दूंगा" (**Tagore, 1917, p. 45**)।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण और आलोचनात्मक पुनरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि रवींद्रनाथ टैगोर के 'आधुनिकता' और 'राष्ट्रवाद' संबंधी विचार तात्कालिक राजनीतिक विमर्शों से कहीं आगे जाने वाले और सुदूर भविष्यद्रष्टा थे। बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में, जब संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के लिए राष्ट्रवाद को एक अकाट्य और परम सत्य मानकर संघर्ष कर रहा था, तब टैगोर ने इसके भीतर छिपे संभावित खतरों और अमानवीय तत्वों को पहचान लिया था। उनका यह वैचारिक पुनरीक्षण सिद्ध करता है कि वे भारत की स्वतंत्रता की आकांक्षाओं के विरोधी नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसी व्यापक स्वतंत्रता के आकांक्षी थे जो संकीर्ण भौगोलिक दीवारों और राजनीतिक सीमाओं के पार जाकर मानवीय आत्मा को मुक्त कर सके।

इस शोध के माध्यम से निम्नलिखित मुख्य निष्कर्ष उभरकर सामने आते हैं:

- **यांत्रिक राष्ट्रवाद की अस्वीकार्यता:** टैगोर ने पश्चिमी तर्ज पर आधारित राष्ट्र-राज्य (Nation-State) की अवधारणा को एक ऐसी 'यांत्रिक व्यवस्था' माना, जो सामूहिक स्वार्थ और व्यावसायिक लिप्सा पर टिकी है। उनका मानना था कि ऐसा राष्ट्रवाद अनिवार्य रूप से साम्राज्यवाद और युद्ध को जन्म देता है, जो व्यक्ति की निजी नैतिकता और समाज की सजीव संरचना को नष्ट कर देता है। उपन्यास *'घर-बाहर'* के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि नफरत और अलगाव पर टिका राष्ट्रवाद अंततः आत्मघाती सिद्ध होता है।
- **वैकल्पिक आधुनिकता का प्रतिपादन:** आधुनिकता के संदर्भ में टैगोर का दृष्टिकोण पारंपरिक सुधारकों या पूर्ण बहिष्कार करने वालों से भिन्न था। उन्होंने पश्चिमी ज्ञानोदय के विज्ञान, तर्क और वैयक्तिक स्वतंत्रता का स्वागत किया, किंतु उसके अंधानुकरण और आत्महीन भौतिकवाद का कड़ा विरोध किया। पूर्व की आध्यात्मिक चेतना और पश्चिम के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का यह समन्वय ही उनकी 'वैकल्पिक आधुनिकता' का आधार था, जिसे उन्होंने शांतिनिकेतन और 'विश्वभारती' के व्यावहारिक शिक्षा मॉडल के रूप में धरातल पर उतारा।
- **मानवतावाद की सर्वोच्चता:** टैगोर के वैचारिक पदानुक्रम में 'देश' या 'राष्ट्र' का स्थान कभी भी 'मानवता' से ऊपर नहीं हो सकता था। उनका अंतरराष्ट्रीयतावाद कोई कमज़ोर आदर्शवाद नहीं, बल्कि वैश्विक नागरिकता की एक ठोस बुनियाद था। वे भारत को एक ऐसा स्वतंत्र राष्ट्र बनते देखना चाहते थे जो अपनी संकीर्णता से मुक्त होकर संपूर्ण विश्व को अपना घर मान सके (*"वसुधैव कुटुंबकम्"*)।

यद्यपि समकालीन नेताओं और इतिहासकारों ने तात्कालिक औपनिवेशिक संघर्ष के दौर में टैगोर के इन विचारों को 'अत्यधिक आदर्शवादी' या 'व्यावहारिकता से दूर' माना, परंतु 21वीं सदी का वर्तमान वैश्विक परिदृश्य उनकी भविष्यवाणियों की सत्यता को प्रमाणित करता है। आज की दुनिया जिस लोकलुभावन उग्र-राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक ध्रुवीकरण, शरणार्थी संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी सीमाओं से परे की समस्याओं से जूझ रही है, उनका समाधान संकीर्ण राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर संभव नहीं है।

अंतिम विश्लेषण में, टैगोर का यह आलोचनात्मक पुनरीक्षण हमें यह गंभीर सीख देता है कि सच्ची आधुनिकता वह है जो समावेशन सिखाए और सच्चा राष्ट्रवाद वह है जो वैश्विक मानवता का विरोधी न हो। टैगोर का दर्शन आज के खंडित विश्व को जोड़ने, नफरत की दीवारों को गिराने और एक अधिक मानवीय व समतावादी वैश्विक समाज के निर्माण के लिए एक अपरिहार्य और कालजयी प्रकाश-स्तंभ बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

क. प्राथमिक स्त्रोत (Primary Sources - टैगोर की मूल कृतियाँ) :

1. **Tagore, R.** (1912). *Gitanjali (Song Offerings)* (pp. 27–28). London: India Society. *(नोट: "Where the mind is without fear..." कविता और संकीर्ण घरेलू दीवारों से मुक्ति संबंधी विचार हेतु पृष्ठ 27-28 प्रासंगिक हैं।)*
2. **Tagore, R.** (1916). *The Home and the World* (S. Surendranath, Trans.; pp. 22–26, 115–120). London: Macmillan. *(नोट: उपन्यास 'घर-बाहर' में निखिल और संदीप के बीच राष्ट्रवाद बनाम मानवतावाद के वैचारिक द्वंद्व और "मैं देश की पूजा करने से इनकार करता हूँ..." के मूल संवाद हेतु पृष्ठ 22 और 118 विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।)*
3. **Tagore, R.** (1917). *Nationalism* (pp. 7–15, 29–34, 45). New York: Macmillan. *(नोट: राष्ट्र को 'यांत्रिक संगठन' और 'पावर मशीन' बताने वाले मुख्य उद्धरण पृष्ठ 7-9 पर; राष्ट्रवाद बनाम मानवतावाद का सिद्धांत पृष्ठ 29-34 पर; तथा "हीरे की कीमत पर कांच नहीं खरीदूँगा..." का प्रसिद्ध कथन पृष्ठ 45 पर उपलब्ध है।)*

4. **Tagore, R.** (1922). *Creative Unity* (pp. 85–89). London: Macmillan. *(नोट: सच्ची आधुनिकता की परिभाषा और पूर्व-पश्चिम के वैचारिक समन्वय की व्याख्या हेतु पृष्ठ 87 मुख्य स्रोत है।)*

ख. द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources - इतिहासकारों व समीक्षकों की पुस्तकें) :

5. **Anderson, B.** (1983). *Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism* (pp. 4–7). London: Verso. *(नोट: राष्ट्रवाद के पश्चिमी और आधुनिक स्वरूप को समझने का सैद्धांतिक आधार।)*
6. **Chatterjee, P.** (1993). *The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories* (pp. 3–11, 116–121). Princeton: Princeton University Press. *(नोट: भारतीय राष्ट्रवाद के 'बाहरी/भौतिक' और 'आंतरिक/आध्यात्मिक' क्षेत्रों में विभाजन और टैगोर के संकट का ऐतिहासिक विश्लेषण।)*
7. **Das Gupta, U.** (2004). *Rabindranath Tagore: A Biography* (pp. 62–68). Delhi: Oxford University Press. *(नोट: शांतिनिकेतन और विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना के ऐतिहासिक संदर्भ और उनके अंतरराष्ट्रीयतावादी शिक्षा मॉडल का विवरण।)*
8. **Gandhi, M. K.** (1909). *Hind Swaraj or Indian Home Rule* (pp. 41–45). Ahmedabad: Navajivan Publishing House. *(नोट: पश्चिमी आधुनिकता और मशीनीकरण पर गांधी के विचारों की टैगोर के दृष्टिकोण से तुलना के लिए उपयोगी।)*
9. **Guha, R.** (2010). *Makers of Modern India* (pp. 171–176, 182). Cambridge: Harvard University Press. *(नोट: आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में टैगोर की भूमिका और गांधी-टैगोर के ऐतिहासिक वैचारिक पत्राचार का संकलन व विश्लेषण।)*
10. **Nandy, A.** (1994). *The Illegitimacy of Nationalism: Rabindranath Tagore and the Politics of Self* (pp. 1–21, 54–62). Delhi: Oxford University Press. *(नोट: टैगोर के उपन्यासों—'गोरा' और 'घर-बाहर'—का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और देशभक्ति बनाम राष्ट्रवाद के अंतर की समीक्षा।)*
11. **O'Connell, K. M.** (2002). *Rabindranath Tagore: The Poet as Educator* (pp. 142–149). Kolkata: Visva-Bharati. *(नोट: मैकॉले की औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के विरोध में शांतिनिकेतन के प्रकृति-अनुकूल वैकल्पिक मॉडल का व्यावहारिक अध्ययन।)*
12. **Sarkar, S.** (1973). *The Swadeshi Movement in Bengal: 1903-1908* (pp. 48–53, 82). New Delhi: People's Publishing House. *(नोट: 1905 के बंग-भंग आंदोलन में टैगोर की शुरुआती सक्रियता और बाद में उग्रवाद के कारण उनके वैचारिक अलगाव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।)*
13. **Sen, A.** (2005). *The Argumentative Indian: Writings on Indian History, Culture and Identity* (pp. 87–110). London: Allen Lane. *(नोट: 'द टैगोर एंड हिज़ इंडिया' अध्याय में टैगोर के उदारवादी तर्कवाद, बहुलतावाद और गांधी के साथ उनके बौद्धिक संवाद का विस्तृत मूल्यांकन।)*

•